THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF YOUTH AFFAIRS AND SPORTS (SHRI KIREN RIJIJU): (a) to (c) Sports' being a State subject the responsibility for providing sports infrastructure, including construction of sports complex / stadium in districts, rests with the State/Union Territory Governments. Central Government supplements their efforts by bridging the critical gaps. Presently, there is no proposal under consideration to establish a sports complex in every Tehsil/District of every State in the country.

The House then adjourned at twenty-one minutes past eleven of the clock.

The House reassembled at two of the clock,

MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.*

GOVERNMENT BILL

The Central Sanskrit Universities Bill, 2019

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let us take up the Central Sanskrit Universities Bill, 2019. Shri Ramesh Pokhriyal 'Nishank' to move a motion for consideration of the Central Sanskrit Universities Bill, 2019. ...*(Interruptions)*... मेरा आग्रह होगा कि कृपया आप अपनी सीट पर बैठें और प्लीज़ अपनी आंखों से काली पट्टी हटा दें। यह हाउस के डेकोरम के खिलाफ है। ...(**व्यवधान**)... माननीय सदस्यगण, माननीय चेयरमैन साहब ने सुबह ही स्थिति स्पष्ट कर दी है कि मामला महत्वपूर्ण है और इस पर बहस होनी चाहिए। स्थिति सामान्य हो जाए ...(**व्यवधान**)... अब इस बिल पर मंत्री जी ...(**व्यवधान**)... माननीय मंत्री जी के अलावा कोई और बात रिकॉर्ड में नहीं जाएगी।...(**व्यवधान**)... कृपया वैल में आकर इस तरह की स्थिति खड़ी न करें।...(**व्यवधान**)...कृपया आंखों पर काली पट्टी बांधकर न रखें, यह हाउस के डेकोरम के खिलाफ है। ...(**व्यवधान**)... कृपया ऐसा न करें। Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक'): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:-

कि संस्कृत में शिक्षण और अनुसंधान के लिए, संस्कृत संवर्धन के सर्वसमावेशी क्रियाकलापों के विकास के लिए विश्वविद्यालयों की स्थापना और निगमन के लिए तथा उससे संबंधित या उससे आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक पर, लोक सभा द्वारा पारित रूप में, विचार किया जाए।

श्री उपसभापति: माननीय मंत्री जी, क्या बिल पेश करते हुए आप कुछ बोलेंगे?

श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक': जी, श्रीमन्। संस्कृत बहुत प्राचीनतम भाषा है और संस्कृत भारत की संस्कृति का परिचायक है। ...(**व्यवधान**)... भारत की संस्कृति का मूल आधार संस्कृत है, इसलिए

इसको उसकी आत्मा कहा जाता है। यह दुनिया की प्राचीनतम भाषा ही नहीं है, बल्कि इस भाषा के अंदर ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान छिपा हुआ है। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: माननीय मंत्री जी की बात के अलावा और कोई बात रिकॉर्ड में नहीं जाएगी।

श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक': मैं कहता हूं कि जो विपुल भंडार संस्कृत में है, संस्कृत के उस विपुल भंडार, को देश की प्रगति और मानवता के कल्याण के लिए तीन डीम्ड विश्वविद्यालयों को विश्वविद्यालय, केंद्रीय विश्वविद्यालयों का दर्जा देने के लिए लोक सभा द्वारा विधेयक पारित हुआ है। ...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, आज हम उसी विधेयक को आपकी और सदन की अनुमति के लिए यहां पर लाए हैं। ...**(व्यवधान)**... संस्कृत के बारे में नेहरू जी ने 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में लिखा है कि यदि कोई मुझसे पूछता है कि भारत के पास बहुमूल्य खजाना क्या है और इसके पास सबसे बड़ी धरोहर क्या है? ...**(व्यवधान)**... तो मैं बेहिचक कह सकता हूं कि वह संस्कृत भाषा और उसमें समस्त वांग्मय है। ...**(व्यवधान)**... यह एक महत्वपूर्ण विरासत है। यह जब तक सक्रिय रहेगी और हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित करेगी, तब तक भारत की आधारभूत बुद्धिमता बनी रहेगी। ...**(व्यवधान)**... संस्कृत के बारे में जिस तरीके से नेहरू जी ने 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया/ में कहा और इंग्लैंड के विलियम जोन्स ने 1786 में कहा कि संस्कृत भाषा की प्राचीनता जो भी हो, यह एक अद्भुत संरचना है। ...**(व्यवधान)**... ग्रीक से अधिक परिपूर्ण, लैटिन से अधिक प्रचुर और इन दोनों की अपेक्षा अधिक मनोहारी और शुद्धता से परिपूर्ण है। ...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, मैं यह समझता हूं कि संस्कृत भाषा के बारे में ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में पूरी दुनिया ने इसका लोहा माना है। ...**(व्यवधान)**... ये जो तीन विश्वविद्यालय हैं, यदि भारत की विश्व में परंपरा को देखा जाए, तो इसी संस्कृत के अंदर चरक ऋषि, जो प्राचीन भारत के विख्यात वैज्ञानिक हुए हैं, उन्होंने रक्त प्रवाह के संबंध में ईसा के 300 वर्ष पूर्व पांच गद्यांशों में इसकी व्याख्या की है, ...**(व्यवधान)**... जबकि विलियम हार्वे को इसका प्रथम प्रस्तोता कहा जाता है। ...**(व्यवधान)**... इसका मतलब यह है कि 300, 400, 500 वर्ष पहले यह जो विज्ञान था, यह जो ज्ञान था, वह हमारी धरती पर था। श्रीमन्, बौधायन में 400 वर्ष पहले जो प्रमेय की व्याख्या की है, उसको आज सारी दुनिया स्वीकार करती है। ...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, आप भी जानते हैं कि आर्यभट्ट जी भी इसी धरती पर पैदा हुए। ...**(व्यवधान)**... श्रीमनू, आर्यभट्ट जी ने दशमलव पूरी दुनिया को दिया। ...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, आर्यभट् महान गणितज्ञ थे। महर्षि भारद्वाज ने सर्वप्रथम विमान विद्या विषयक ग्रंथ निकाला। उस पर बहुत सारे अनुसंधान और शोध हो चुके हैं। ...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, इसी संस्कृत भाषा के अंदर कपिल मुनि ने सांख्य दर्शन को दिखाया। ...**(व्यवधान)**... जो चेतन पुरुष और तीन गुणों से युक्त प्रकृति ही सृष्टि का मूल कारण है, यह उन्होंने बताया। ...**(व्यवधान)**... श्रीमनू, ऋषि कणाद वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक थे। ऋषि कणाद ने भौतिक विज्ञान पर काम किया। ...**(व्यवधान)**... जिस तरीके से उनका परमाणु आविष्कार प्रसिद्ध हुआ, इससे मैं यह समझता हूं कि जो भारतीय वैज्ञानिक हैं, वे बहुत दूरदर्शी थे। ...**(व्यवधान)**... पूरी दुनिया में सुश्रुत को "शल्य चिकित्सा" का जनक माना जाता है। उन्होंने ही त्वचारोपण (प्लास्टिक सर्जरी) की शल्य-क्रिया का विकास किया।

[श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक']

...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, ये हिन्दुस्तान के ही प्राचीन वैज्ञानिक हैं। ...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, प्राचीन भारत की जो सम्पदा है, उसी को चरक ऋषि ने आयुर्वेद कहा है। ...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, पूरी दुनिया के लोग इस बात को महसूस कर रहे हैं कि जो "चरक संहिता" है, जिसे आयुर्वेद कहा गया है, वह चरक है। ...**(व्यवधान)**... यदि भगवान की सबसे सुंदरतम कृति मनुष्य है और उसको सुरक्षित रखना है, उसको स्वस्थ रखना है, तो इसके लिए बहुत जरूरी है कि आयुर्वेद को आगे किया जाए। ...**(व्यवधान)**... श्रीमन्, भास्कराचार्य द्वितीय ने खगोल शास्त्र में गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज 500 वर्ष पूर्व की थी। ...**(व्यवधान)**... धरती पर जो गुरुत्वाकर्षण शक्ति है, उसके बारे में पूरी दुनिया जानती है। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमन्, इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि संस्कृत ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान की भाषा है। ...**(व्यवधान)**... भारतीय विज्ञान परम्परा विश्व वैज्ञानिक परम्परा में एक है। भारत में विज्ञान का उदय आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व माना जाता है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त सिंधु घाटी के प्रमाणों से वहां के लोगों की वैज्ञानिक दृष्टि तथा वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोगों से यह पता चलता है कि यह कितनी प्राचीन भाषा है। ...**(व्यवधान)**... श्रीमान्, प्राचीन काल में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में, वास्तुकला के क्षेत्र में, खगोल विज्ञान के क्षेत्र में, गणित के क्षेत्र में की गई खोजों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। ...**(व्यवधान)**... कई खोजें न केवल देश में, बल्कि पूरी दुनिया में संस्कृत में हुई हैं। ...**(व्यवधान)**... इनकी खोजों का आज भी उसी रुप में प्रयोग किया जाता है। ...**(व्यवधान)**... श्रीमान्, वैदिक युग का जो गणित है और जो रेखागणित है ...**(व्यवधान)**... जो ज्यामिति है, इसका पर्याप्त विकास यदि दुनिया में कहीं हुआ है, तो यह निश्चित रूप से भारत की धरती पर हुआ है। ...**(व्यवधान)**... वैदिक काल के लोग खगोल विज्ञान का अच्छा खासा ज्ञान रखते थे और यह संस्कृत भाषा का ही प्रभुत्व रहा है, उसी की कला में यह विद्वता रही है कि यह चीज़ पूरी दुनिया ने ली है। ...**(व्यवधान)**... वैदिक भारतीयों को 27 नक्षत्रों का ज्ञान था। ...**(व्यवधान)**... उनमें वर्ष, महीने और दिन के रूप में समय का विभाजन करने की पूरी ताकत और क्षमता थी। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमन्, लगध नाम के ऋषि वैज्ञानिक ने "ज्योतिष वेदांग" में तत्कालीन खगोलीय ज्ञान को व्यवस्थित किया था। ...**(व्यवधान)**... वैदिक युग की विशिष्ट उपलब्धि चिकित्सा के क्षेत्र में रही है। ...**(व्यवधान)**... शरीर का सूक्ष्य से सूक्ष्म अध्ययन करना हमारे ग्रंथों में रहा है, जिसको आप पोस्टमार्टम कहते हैं। इसीलिए मैं समझता हूं कि चाहे प्रकृति के रूप में हो, प्रकृति को बचाना, प्रकृति के साथ समन्वय करना, यह भी हमारे उन ग्रंथों में है। ...**(व्यवधान)**... मौसम परिवर्तन की तमाम चुनौतियों से हमारे ग्रंथों का यह ज्ञान, विज्ञान जूझ सकता है। ...**(व्यवधान)**... शरीर में सूक्ष्म जीवों की उपस्थिति तथा रोग पैदा करने वाले आनुवांशिक कारकों के सिद्धांत का उन्हें ज्ञान था, तो निश्चित रूप से यह हमारे संस्कृत के उन ग्रंथों में था। ...**(व्यवधान)**... माननीय उपसभापति जी, वैदिक काल में बीज गणित, भौतिक शासत्र, रसायन शास्र और खगोल शास्र के विकास की चरम सीमा थी। भारत के ऋषि, मुनि और आचार्य उस समय के महान् वैज्ञानिक थे। आज जिस ज्ञान की आवश्यकता

है, उसे मोदी सरकार देश की उन्नति और दुनिया के मार्गदर्शन के लिए लाना चाहती है। इसलिए जो तीन डीम्ड विश्वविद्यालय हैं, हम उन्हें पूरी तरह से केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करके पूरी दुनिया में उस ज्ञान और विज्ञान को पहुंचाना चाहते हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमान्, मैं यह भी कहना चाहता हूं कि आज जर्मनी में 14 विश्वविद्यालय हैं, जिनमें संस्कृत पढ़ाई जाती है। इसी प्रकार से दुनिया के 250 विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है और यह आज से नहीं बल्कि सैकड़ों वर्षों से पढ़ाई जा रही है, क्योंकि वे इस बात को जानते हैं कि संस्कृत ग्रंथों में, वे चाहे वेद हैं, पुराण हैं, उपनिषद् हैं, या चरक संहिता है, उनमें दुनिया भर का ज्ञान और विज्ञान समाया हुआ है। उसी ज्ञान और विज्ञान को पूरी ताकत से विस्तार देने के लिए इन तीन डीम्ड विश्वविद्यालयों को केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाया गया है। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: मेरा माननीय सदस्यों से आग्रह है कि वे कृपया अपनी सीटों पर जाएं। ...**(व्यवधान)**...

श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक': श्रीमान्, संस्कृत हमारी भारतीय भाषाओं को भी बहुत सशक्त करती है। हमारे संविधान के अनुच्छेद 251 में स्पष्ट लिखा है कि हम भारतीय भाषाओं को सशक्त करेंगे और भारतीय भाषाओं के विकास और समृद्धि के लिए संस्कृत अहम भूमिका निभाएगी। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमान्, यह संस्कृत की खूबसूरती है कि यदि संस्कृत में 'आकाश:' बोलते हैं, तो हिन्दी में 'आकाश' बोलते हैं और तेलुगु में 'आकाशमु' बोलते हैं और कन्नड़ में 'आकाशवु' बोलते हैं। इसी प्रकार संस्कृत में यदि 'भूमिः' बोलते हैं, तो हिन्दी, तेलुगु और कन्नड़ में भी 'भूमि' ही बोलते हैं। इसी प्रकार यदि संस्कृत में 'नमस्कार:' बोलते हैं, तो हिन्दी में 'नमस्कार', तेलुगु में 'नमस्कारमु', कन्नड़ में 'नमस्कार' और उड़िया में भी 'नमस्कार' होता है। इसी प्रकार से यदि संस्कृत में, प्रसाद को 'प्रसाद:' बोलते हैं, तो हिन्दी में 'प्रसाद', तेलुगु में 'प्रसादमु', कन्नड़ और उड़िया में भी 'प्रसाद' ही बोलते हैं। सभी भारतीय भाषाओं में 60 से लेकर 70 प्रतिशत तक, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृत समाई हुई है। उड़िया भाषा में तो जो क्रिया-पद हैं, वे संस्कृत-मूलक हैं। संस्कृत में 'कुर्वन्ति' बोलते हैं, तो उसी को उड़िया में 'करुछन्ति' कहते हैं। इधर 'धरन्ति' बोलते हैं, तो उड़िया में 'धरुछन्ति' बोलते हैं। संस्कृत में 'कथयन्ति' बोलते हैं, तो उड़िया में 'कहुछन्ति' बोलते हैं। इस प्रकार से देखा जाए, तो संस्कृति के अधिकांश शब्द भारतीय भाषाओं में देखने को मिलेंगे। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमान्, इतना ही नहीं, भारतीय भाषाओं में तो संस्कृत के अधिकांश शब्दों का प्रयोग होता ही है, यदि मैं दुनिया की भाषाओं को देखूं, तो संस्कृत भाषा से जो अंग्रेज़ी भाषा है, उसकी भी उत्पत्ति मान सकते हैं, क्योंकि मां को संस्कृत में 'मातर' बोलते हैं, तो अंग्रेज़ी में उसी को 'मदर' बोलते हैं। इसी प्रकार संस्कृत में 'भातृ' बोलते हैं, उसी को अंग्रेज़ी में 'ब्रदर' बोलते हैं। इसी प्रकार संस्कृत में 'दुहितर' बोलते हैं, तो अंग्रेज़ी में डॉटर बोलते हैं। इस प्रकार देखा जाए, तो दुनिया की दर्जनों भाषाएं इस बात का सबूत हैं कि उन्होंने संस्कृत के ही शब्दों को लिया है। ...**(व्यवधान)**...

[श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक']

श्रीमान्, मैं समझता हूं कि संस्कृत भाषा में जो ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान हमारे प्राचीन ग्रंथों में है, वह केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि दुनिया के लिए है, क्योंकि हमारा विचार है-

"अयः निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।"

हमने पूरे विश्व को एक कुटुम्ब माना है। इसलिए संस्कृत में जो ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान है, वह पूरे विश्व के लिए है। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमान्, मैं आभारी हूं प्रधान मंत्री श्री मोदी जी का, जिन्होंने कहा है कि हमें ऐसा भारत चाहिए, जो स्वस्थ भारत हो, समृद्ध भारत हो, सशक्त भारत हो, श्रेष्ठ भारत हो और एक भारत हो। वह इसी भाषा के माध्यम से होकर गुजरेगा। जो संस्कृत के तीन केन्द्रीय विश्वविद्यालय बना रहे हैं, वे निश्चित रूप से इस देश और दुनिया में अपने फलक से ज्ञान, विज्ञान, योग और आयुर्वेद सहित उन तमाम विधाओं को लेकर चलेंगे, जिससे दुनिया में हिन्दुस्तान लीडरशिप लेगा। इसलिए हम सारी भारतीय भाषाओं को भी सशक्त करना चाहते हैं। और संस्कृत में यह जो हमारी ...**(व्यवधान)**... संपदा है ...**(व्यवधान)**... तमाम गुलामी के थपेड़ों ने ...**(व्यवधान)**... और अंग्रेज़ों ने जिस तरीके से हमारी ...**(व्यवधान)**... उस सपंत्ति को ...**(व्यवधान)**... हमारे उस विज़न को ...**(व्यवधान)**... हमारे उस विज्ञान को नष्ट करने की कोशिश की है ...**(व्यवधान)**... ये तीन केंद्रीय विश्वविद्यालय ...**(व्यवधान)**... प्राचीन भारत ...**(व्यवधान)**... जो विश्व गुरु था ...**(व्यवधान)**...उसको फिर से विश्व गुरु बनाने की श्रृंखला में ...**(व्यवधान)**... बहुत महत्वपूर्ण योगदान देंगे। ...**(व्यवधान)**... इसलिए उपसभापति जी, यह बिल, जो लोक सभा से पास होकर यहाँ आया है ...**(व्यवधान)**... मैं उस संदर्भ में बहुत विनम्रता से यह कहना चाहता हूं कि ...**(व्यवधान)**... यह देश के हित में है ...**(व्यवधान)**... दुनिया के हित में है ...**(व्यवधान)**... और मानवता के हित में है। ...**(व्यवधान)**... इस बिल को सर्वसम्मति से पारित किया जाए। मैं यह कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं। ...**(व्यवधान)**...

उपसभापति जी, आपने मुझे यहाँ पर बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

The question was proposed.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The motion is moved. क्या माननीय सदस्य बोलना चाहेंगे? डा. सत्यनारायण जटिया जी, आप बोलिए।

डा. सत्यनारायण जटिया (मध्य प्रदेश): उपसभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं अपनी बात को आरंभ करते हुए कहना चाहूंगा कि,

"यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।

तया मामद्य मेधायग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।"

जिस मेधा से हमारे पूर्वजों ने हमारी संस्कृति का उत्थान किया है ...**(व्यवधान)**... वही मेधा ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापतिः मेरा सभी माननीय सदस्यों से आग्रह है कि वे कृपा करके अपनी सीट पर चले जाएं। ...**(व्यवधान)**...

डा. सत्यनारायण जटिया: जिससे हम अपने ...**(व्यवधान)**... और देश की संस्कृति का उत्थान कर सकें। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापतिः डा. सत्यनारायण जटिया जी की बात के अलावा और कोई बात record पर नहीं जा रही है। ...**(व्यवधान)**...

डा. सत्यनारायण जटिया: निश्चित रूप से ...**(व्यवधान)**... इस विधेयक के माध्यम से हमने अपने तीन डीम्ड संस्कृत विश्वविद्यालयों का उन्नयन करने का काम किया है। ...**(व्यवधान)**... ये तीन डीम्ड विश्वविद्यालय ...**(व्यवधान)**... अर्थात् राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ...**(व्यवधान)**... दिल्ली ...**(व्यवधान)**... श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ...**(व्यवधान)**... नई दिल्ली ...**(व्यवधान)**... और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ...(व्यवधान)... तिरुपति का उन्नयन ...**(व्यवधान)**... केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक, 2019 के माध्यम से केंद्रीय विश्वविद्यालयों ...**(व्यवधान)**... में करने के लिए ...**(व्यवधान)**... यहाँ पर प्रस्तुत करने का काम किया है। ...**(व्यवधान)**... मैं इसके लिए माननीय शिक्षा मंत्री जी और माननीय प्रधान मंत्री जी को बधाई देना चाहूंगा। ...**(व्यवधान)**... हमारा संस्कृति वांग्मय अत्यंत ही समृद्ध है। ...**(व्यवधान)**... हमें इसके माध्यम से अपनी सभी विधाओं में ...**(व्यवधान)**... उत्थान करने का मौका मिला है। ...**(व्यवधान)**... यदि हम वैदिक परंपरा से ...**(व्यवधान)**... आरंभ करें तो निश्चित रूप से हमारी वैदिक परंपरा ...**(व्यवधान)**... हमारा उन्नयन करने के लिए ...**(व्यवधान)**... हमारा मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त है। ...**(व्यवधान)**... जिसमें कहा गया है ...**(व्यवधान)**...

"ऊँ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद् भद्रं तन्न आ सुव।।"

हमने परमात्मा से कहा है कि ...**(व्यवधान)**... इस सारे जगत की ...**(व्यवधान)**... जिस प्रकार से संरचना हुई है ...**(व्यवधान)**... उसका विकास ...**(व्यवधान)**... सभी लोगों को ...**(व्यवधान)**... बराबर रूप से प्राप्त ...**(व्यवधान)**... कराने का काम करें। ...**(व्यवधान)**... इस प्रकार से ...**(व्यवधान)**... यह जो विज्ञान है ...**(व्यवधान)**... यह संस्कृत में है। ...**(व्यवधान)**... इसका अभ्यास करने से ...**(व्यवधान)**... विद्या अभ्यास करने से ...**(व्यवधान)**... विद्या का अभ्यास करने के बाद ...(व्यवधान)... निश्चित रूप से ...**(व्यवधान)**... उसमें विशिष्ट ...**(व्यवधान)**... ज्ञान प्राप्त होता है। ...**(व्यवधान)**... ज्ञान से विज्ञान

[डा. सत्यनारायण जटिया]

होता है ...**(व्यवधान)**... विज्ञान से अनुसंधान होता है। ...**(व्यवधान)**... यह इन सभी विधाओं में पारंगत करने के लिए ...**(व्यवधान)**... हमें एक उपाय प्रदान करती है। ...**(व्यवधान)**... हमारे यहाँ पर कहा गया है,

"श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।।"

हम अभ्यास के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं। ...**(व्यवधान)**... अभ्यास के माध्यम से उसमें श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं। ...**(व्यवधान)**... यह एक ऐसी नई पहल है जिसके माध्यम से हम भारतीय संस्कृति की स्थापना करना चाहते हैं। हमारे भारतवर्ष के बारे में कहा गया है कि -

"उत्तरम् यत् समुद्रस्य हिमाद्रे: चैव दक्षिणम्।

वर्षम् तद् भारतम् नाम भारती यत्र संतति:।।"

हमारी यह जो संस्कृति है ...**(व्यवधान)**... यह भारतीय संस्कृति है। ...**(व्यवधान)**... क्योंकि उत्तर से लेकर दक्षिण तक ...**(व्यवधान)**... हिंद तक ...**(व्यवधान)**... यह जो विस्तार है ...**(व्यवधान)**... हमारा देश है। ...**(व्यवधान)**... जो हिमालय है ...**(व्यवधान)**... हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। ...**(व्यवधान)**... हमारा यह जो भारतीय संस्कृति का प्रदेश है ...**(व्यवधान)**... निश्चित रूप से ...**(व्यवधान)**... इसके माध्यम से ...**(व्यवधान)**... संस्कृत का ...**(व्यवधान)**... और संस्कृत के इन सारे डीम्ड विश्वविद्यालयों में ...**(व्यवधान)**... डीम्ड विश्वविद्यालयों के माध्यम से ...**(व्यवधान)**... इसको कर सकते हैं। ...**(व्यवधान)**... हमारे यहाँ पर विद्या का ...**(व्यवधान)**... निश्चित रूप से बड़ा महत्व है। ...**(व्यवधान)**... हमारे यहाँ कहा गया है कि

"विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्,

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति, धनाद्धर्मं तत: सुखम्।" ...**(व्यवधान)**...

विद्या से विनय प्राप्त होता है, विनय से योग्यता प्राप्त होती है और उसी से हम सब प्रकार के लौकिक सुखों को प्राप्त कर सकते हैं, आध्यात्मिक सुखों को प्राप्त कर सकते हैं। ...**(व्यवधान)**... इस प्रकार से इसके माध्यम से हम सब प्रकार से सुख-समृद्धि को प्राप्त करने का उपाय कर सकते हैं। ...**(व्यवधान)**... विद्या का जो दूसरा प्रकार है, वह इस प्रकार का है कि

"विद्या विवादाय धनं मदाय शक्ति: परेषां परिपीडनाय।

खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।" ...**(व्यवधान)**...

विद्या को विवादों में लगाना, "विद्या विवादाय धनं मदाय", धन को प्रमाद में लगाना, ...**(व्यवधान)**... ये सब लक्षण विद्या के नहीं हैं। ...**(व्यवधान)**... इसलिए विद्या का लक्षण तो है - "ज्ञानाय दानाय

च रक्षणाय।" ...(**व्यवधान**)... यह ज्ञान, दान, अनुरक्षण करने के लिए होती है। ...(**व्यवधान**)... मैं निश्चित रूप से इन सारी बातों के लिए हमारे माननीय शिक्षा मंत्री जी को बहुत-बहुत बधाई देना चाहूँगा। ...(**व्यवधान**)... हमारे यहाँ पर हमारे वैदिक वांग्मय, उपनिषद्, ये सारे ज्ञान के केन्द्र बने हुए हैं। ...(**व्यवधान**)... इनके माध्यम से हमारे जीवन की सारी शिक्षा, उच्च आचरण करने की शिक्षा दी गई है। ...(**व्यवधान**)... किस प्रकार से मनुष्य को संयमित किया जा सकता है, उसकी शिक्षा यहाँ पर दी गई है। ...(**व्यवधान**)... अनेक उपनिषदों में भी यह बात की गई है। ...(**व्यवधान**)... हमारी गीता का उपनिषद् भी निश्चित रूप से हमें महत्वपूर्ण संदेश देने का काम करता है। ...(**व्यवधान**)... उसमें कहा गया है कि -

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।" ...(**व्यवधान**)...

जब-जब भी कर्तव्य और दायित्व की हानि होती है, तब-तब निश्चित रूप से ...(**व्यवधान**)... मार्गदर्शन करने का काम करते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वेल में जो माननीय सदस्य हैं, वे कृपया अपनी-अपनी सीट पर वापस जाएँ और सदन को शांतिपूर्वक चलने दें। ...(**व्यवधान**)...

डा. सत्यनारायण जटिया:

"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।" ...(**व्यवधान**)...

हरेक काल में आकर निश्चित रूप से इसका मार्गदर्शन करने में समर्थ होते हैं। ...(**व्यवधान**)... यह जो हमारा विज्ञान है, यह आत्मिक शक्ति का विज्ञान भी है। ...(**व्यवधान**)... इसलिए मनुष्य को अनेक प्रकार के कष्टों से मुक्त करने के लिए भी हमारे यहाँ कहा गया है कि ये जो सारे सांसारिक कष्ट हैं, उन्हें भी दूर करने के उपाय हो सकते हैं। ...(**व्यवधान**)... इसके उपाय करने के लिए भी कहा गया है कि

"न जायते म्रियते वा कदाचि न्नायं भूत्वा भविता वा नभूय:।

अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।"

...(**व्यवधान**)... इसलिए संसार में अपने रास्ते पर चलते हुए हम आगे बढ़ने का काम करें। ...(**व्यवधान**)...

"संसार की समरस्थली में धीरता धारण करो।

चलते हुए निज इष्ट पथ पर संकटों से मत डरो।

[डा. सत्यनारायण जटिया]

अति धीरता के साथ अपने कार्य में तत्पर रहो।

विपत्तियों के वार सारे वीर बन करके सहो।

भय, बाधाएँ मुक्त हो जाएँगी।

होगी सफलता अंत में, फिर कीर्ति फैलेगी हमारी,

चहुँ ओर दिग-दिगन्त में।" ...**(व्यवधान)**...

इस प्रकार से संसार की चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यक्ति यदि कहीं से सामर्थ्य ले सकता है, ...**(व्यवधान)**... तो हमारी संस्कृत और संस्कृति से ले सकता है। ...**(व्यवधान)**... इसमें कहा गया है, ...**(व्यवधान)**... इसमें हमारी पहचान बताने का काम हुआ है। ...**(व्यवधान)**...

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी,

आओ विचारें आज मिल कर ये समस्याएँ सभी।

यद्यपि इतिहास अपना ज्ञात पूरा है,

हम कौन थे, इस ज्ञान का, फिर भी अधूरा है नहीं,

भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीलास्थल कहाँ,

फैला मनोहर गिरि हिमालय, और गंगा जल कहाँ।

संपूर्ण देशों से अधिक, किस देश का उत्कर्ष है,

उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन भारतवर्ष है।" ...**(व्यवधान)**...

इस भारतवर्ष की पहचान कराने के लिए ...**(व्यवधान)**... हमारी संस्कृति की पहचान कराने के लिए यह संस्कृत वांग्मय है। ...**(व्यवधान)**... हमारे यहाँ पर गुरु का सम्मान करने के लिए, गुरु का आदर करने के लिए कहा गया है। ...**(व्यवधान)**... हमारे यहाँ कहा गया है, पाणिनि ने कहा है -

"अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजज शलाकया।

चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरवे नम:।।" ...**(व्यवधान)**...

हमारी अज्ञान रूपी चक्षुओं को खोलने के लिए ज्ञान रूपी शलाका लगा कर वे हमें प्रकाशित करने का काम करते हैं। ...**(व्यवधान)**...

"अखंड-मंडलाकार व्याप्तं येन चराचरम्,

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नम:।" ...**(व्यवधान)**...

हमारे यहाँ गुरु का मान रखा गया है। ...**(व्यवधान)**... हमारी संस्कृति में पहली गुरु माता है, फिर पिता है, फिर हमारा गुरु वह है, जो संस्कार देने वाला है और फिर पूरा समाज है, जो हमें इस प्रकार की संस्था में पूर्ण करने का काम करता है। ...**(व्यवधान)**... कहते हैं कि निश्चित रूप से हमारी संस्कृति में शिक्षा एवं गुरु का बहुत अधिक महत्व है। ...**(व्यवधान)**... हमारे यहां चरित्र के निर्माण के बारे में भी बहुत सारी बातों को समावेशित किया गया है। ...**(व्यवधान)**... नीतिशतकम् में कहा गया है-

"निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु।

लक्ष्मी समाविषतु गच्छति वा यथेष्ठम्।।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।

अर्थात् आगे बढ़ जाओ। ...**(व्यवधान)**...

न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।"

अर्थात् न्याय के पथ से हम विचलित नहीं होंगे। ...**(व्यवधान)**... इस प्रकार से न्याय के पथ पर चलते हुए हम निरंतर आगे चलते रहें। ...**(व्यवधान)**... हम सभी जानते हैं कि संस्कृत अनेक भाषाओं की जननी है। ...**(व्यवधान)**... अगर हम बंगला में देखें तो रविन्द्र नाथ टैगोर जी ने कहा है -

"नंदित करो, करो प्रभु नंदित, दो नंदित कर हे! ...**(व्यवधान)**...

उज्ज्वल करो, करो निर्मल, कर दो सुन्दर हे! ...**(व्यवधान)**...

निर्भय करो, निरलस करो, निःसंशय करो हे! ...**(व्यवधान)**...

युक्त करो सवार संगे, मुक्त करो हे बंध! ...**(व्यवधान)**...

'युक्त करो सवार संगे', अर्थात् इसमें सबके साथ मिलकर चलने का आह्वान किया गया है। ...**(व्यवधान)**...

चरण-पद्मे मम चित्त, निष्पंदित करो हे! ...**(व्यवधान)**...

नंदित करो, करो प्रभु नंदित, दो नंदित कर हे!" ...**(व्यवधान)**...

इस प्रकार से हम अपने मार्ग पर चलते हुए आगे बढ़ें। ...**(व्यवधान)**...

"यदि पण करे थकिस टेपण तोबार रबै रबै हबै हबै।" ...**(व्यवधान)**...

यदि आपने संकल्प किया है, तो यह कार्य होकर रहेगा। ...**(व्यवधान)**... ऐसे ही, बंगला भाषा

[डा. सत्यनारायण जटिया]

में भी संस्कृत होने के नाते से हम 'वंदे मातरम्' कहते हैं, जो हमारा राष्ट्रीय गीत है। ...**(व्यवधान)**... भले ही यह गीत बंगला भाषा में लिखा गया हो, किंतु उसमें मुख्यत: संस्कृत का ही संकल्प लिया गया है। ...**(व्यवधान)**... उसमें हमने माता का जो वर्णन किया है, निश्चित रूप से वह हमारे लिए वंदनीय है। ...**(व्यवधान)**... आज के इस प्रसंग पर जिस प्रकार से सरकार ने हमारे तीनों डीम्ड विश्वविद्यालयों का उन्नयन करने का काम किया है, उन्हें केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में बदलने का काम किया है, वह निश्चित रूप से एक अनुकरणीय कदम है। ...**(व्यवधान)**... हम जानते हैं कि जो हमारी वैज्ञानिक भाषा है, यह उसका आधार है।...**(व्यवधान)**... इसका अपना व्याकरण बहुत समृद्ध है।...**(व्यवधान)**... उस समृद्ध व्याकरण के माध्यम से भी हम इसे आगे बढ़ाने का काम कर सकते हैं। ...**(व्यवधान)**... हमारे यहां पर सारे विश्व की शांति के बारे में कहा गया है -

"ऊँ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षम् शान्ति:

पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:।

वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिब्रह्म शान्ति:,

सर्व शान्ति:, शान्तिरेव शान्ति:, सा मा शान्तिरेधि।।

यतो यत समीहसे ततो नो म भयं कुरु।

शंन: कुरु प्रजाभ्यो भयं न पशुभ्य:।

ऊँ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।।"

इस तरह सब प्रकार से वातावरण में अनुकूलता पैदा हो जाए। ...**(व्यवधान)**...

"संगच्छध्वं संवद्ध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

समानो मन्त्र: समिति: समानी।

समानं मन: सहचित्तमेषाम्।"

इस का अर्थ है - हम साथ-साथ चलें, साथ-साथ बढ़ें। ...**(व्यवधान)**...

"यह कदम बढ़े, वह कदम बढ़े, हम कदम बढ़ाएं मंज़िल तक। ...**(व्यवधान)**...

यह पौध लगे, वह पौध लगे, बढ़ जाए छाया मंज़िल तक। ...**(व्यवधान)**...

चट्टानें आएं देह धो के, दुर्भाग्य भले राहें रोके। ...**(व्यवधान)**...

ताकत कदमों में चलने की, फिर क्या मौके या बेमौके। ...**(व्यवधान)**...

उम्मीद उठे, उम्मीद बढ़े, उम्मीदें जाएं मंजिल तक।।" ...**(व्यवधान)**...

इस प्रकार यह एक बहुत अच्छा कदम है, जो हमको मंजिल तक ले जाने के लिए एवं आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। ...**(व्यवधान)**... इस दृष्टि से हम सब मिलकर एक अच्छा भारत बनाना चाहते हैं, एक अच्छे भारत का निर्माण करना चाहते हैं, उस भारत में अपनी संस्कृति को स्थापित करना चाहते हैं और संस्कृति की स्थापना के लिए संस्कृत का उन्नयन करना चाहते हैं। ...**(व्यवधान)**... इस दृष्टि से यह बहुत आवश्यक कदम है, बहुत ही अनुकरणीय कदम। ...**(व्यवधान)**... सरकार ने इसके माध्यम से एक बहुत ही आवश्यक काम किया है। ...**(व्यवधान)**... इस अवसर पर निश्चित रूप से मैं माननीय नरेन्द्र मोदी जी का और हमारे माननीय शिक्षा मंत्री जी का अभिनन्दन करना चाहता हूं। ...**(व्यवधान)**... इन्होंने एक नया क्षितिज बनाने का काम किया है और इस क्षितिज में नये-नये सप्तरंग भरने का काम किया है। ...**(व्यवधान)**... मैं निश्चित रूप से इस कार्य के लिए सरकार का अभिनन्दन करता हूं। ...**(व्यवधान)**...

"क्षितिज तक प्रत्येक दिशि में, हम उठें नव प्राण भरने। ...**(व्यवधान)**...

नव सृजन की साध लेकर, हम उठें निर्माण करने।। ...**(व्यवधान)**...

साधना के दीप हों, शुभ ज्ञान का आलोक छाए। ...**(व्यवधान)**...

नष्ट तृष्णा का तिमिर हों, धाम अपना जगमगाए।।" ...**(व्यवधान)**...

इस सरकार के कदम का अभिनन्दन करते हुए मैं इसका स्वागत करता हूं और उम्मीद करता हूं कि सदन इसे पूर्ण समर्थन के साथ पारित करेगा। ...**(व्यवधान)**... ऊँ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।" ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: माननीय सदस्यगण कृपया अपनी-अपनी सीटों पर वापस जाएं और बहस को चलने दें। माननीय चेयरमैन साहब ने सुबह ही कहा था ...**(व्यवधान)**... प्लीज, माननीय चेयरमैन साहब ने सुबह ही कहा था कि यह महत्वपूर्ण विषय है, परंतु स्थिति सामान्य होने के बाद आप इस पर बहस करें। कृपया इस बहस को चलने दें। ...**(व्यवधान)**...

The House stands adjourned till 1100 hours on Tuesday, the 3rd March, 2020.

The House then adjourned at thirty-one minutes past two of the clock till eleven of the clock on Tuesday, the 3rd March, 2020.